चिड़ियाघर में सबसे बड़ी परछाईं

जैक केन्ट

हिन्दी: प्रो. योगेश

चिड़ियाघर में सबसे बड़ी परछाईं

जैक केन्ट

हिन्दी: प्रो. योगेश

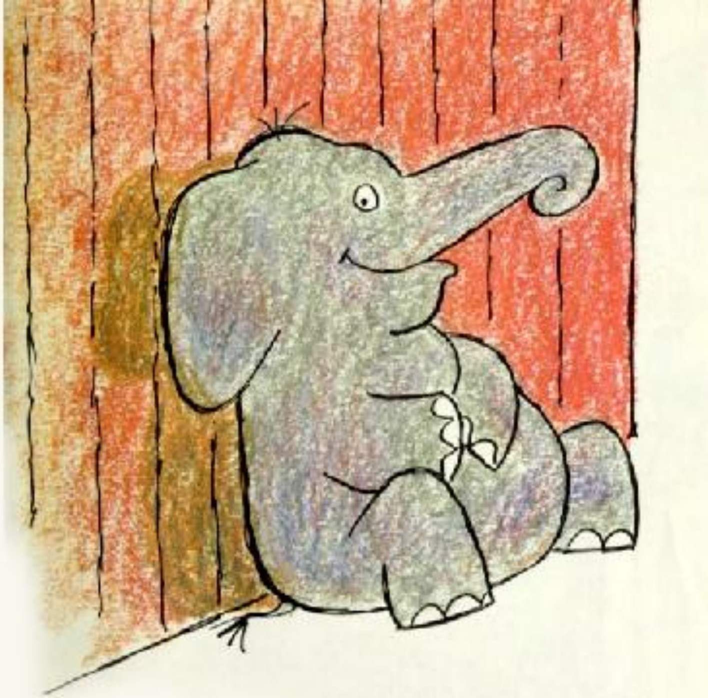

चिड़ियाघर में एक हाथी रहता था,

जिसका नाम था गूबर।

गूबर एक बहुत ही खास शख्सियत था,

या कम से कम वह खुद तो यही सोचता था।

बाकी के सारे जानवर या तो पिंजरों में रहते थे,
या फिर सलाखों के पीछे।
गूबर एक छोटे से टापू पर रहता था,
जिसके चारों ओर एक खाई थी।
लेकिन गूबर की खुद को ख़ास मानने की
वजह यह नहीं थी।

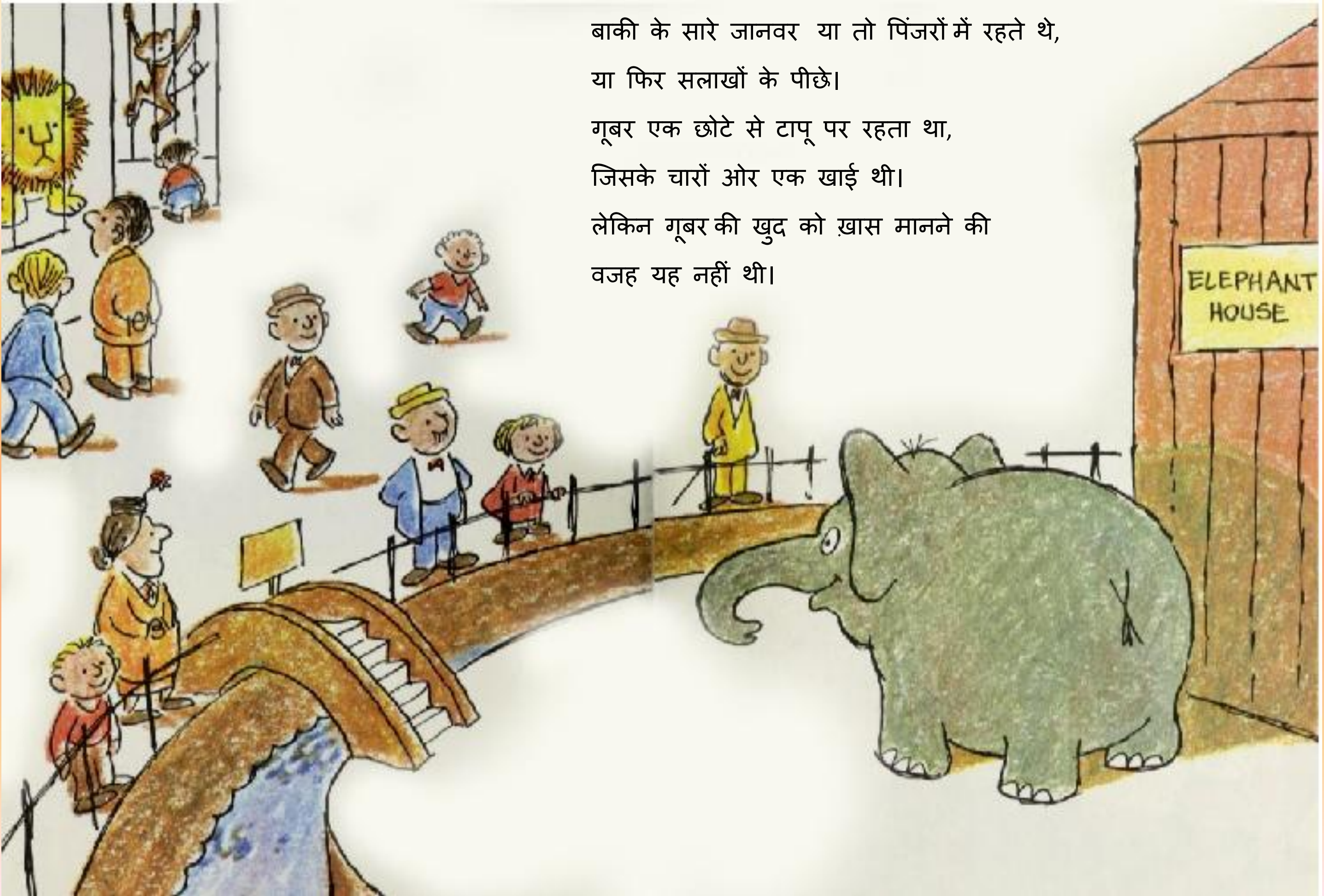

खाई के ऊपर एक पुल बना था,
जिस पर एक तख्ती पर लिखा था,
"हाथी की सवारी, १० पैसे में।"
दिन में दो बार, सुबह और शाम को,
गूबर की पीठ पर एक हौदा बाँध दिया जाता था।
बच्चे इस हौदे में बैठते थे,
और गूबर उन्हें सैर कराता था।
बच्चों को गूबर बहुत अच्छा लगता था,
और वे उसे मूँगफलियाँ खिलाते थे।
लेकिन यह भी वह बात नहीं थी,
जिसकी वजह से गूबर
अपने आप को खास समझता था।

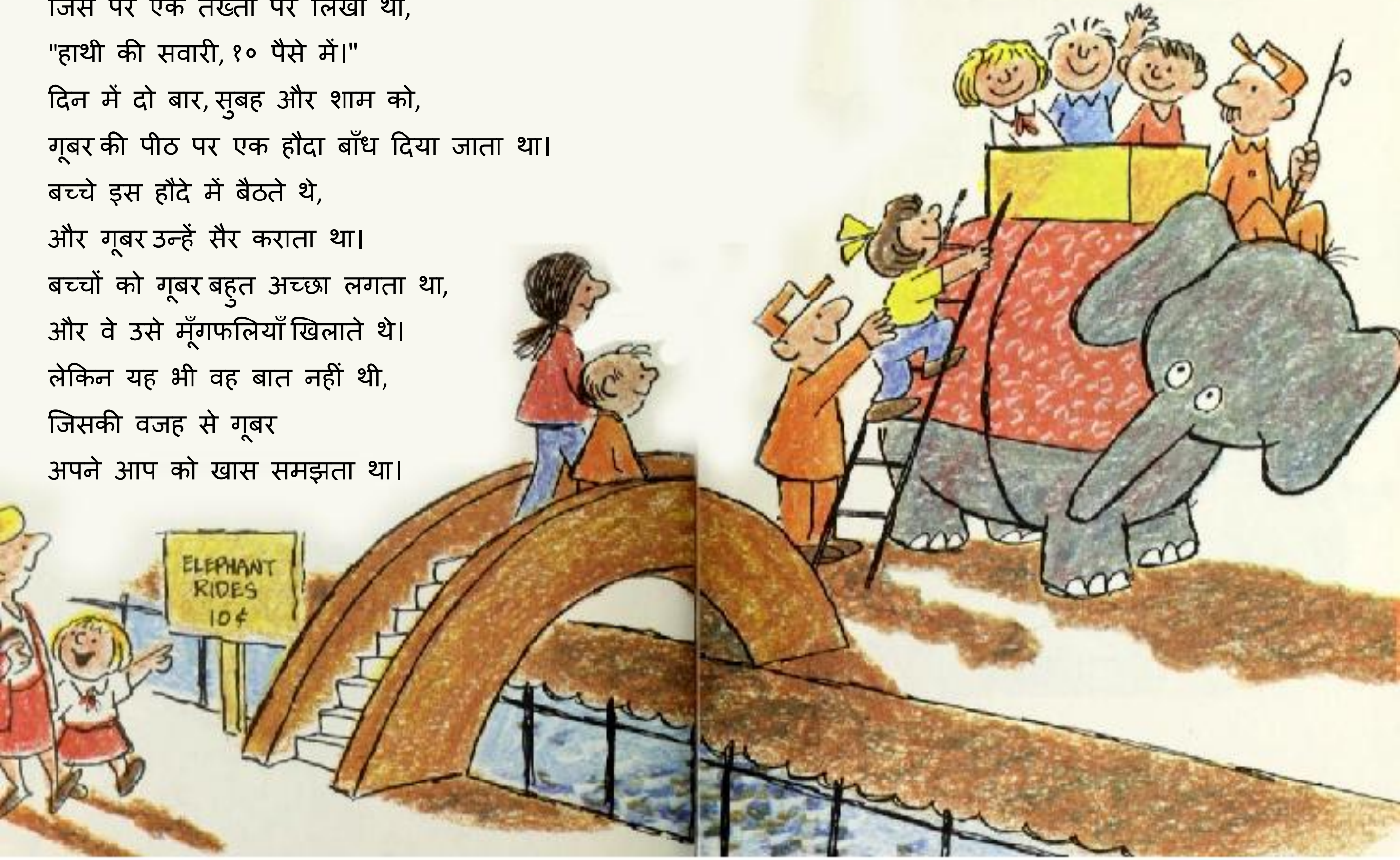

अपने टापू से गूबर को अधिकांश जानवर दिखाई देते थे।
वे सब अलग-अलग कद के थे,
कुछ छोटे, कुछ बड़े, और कुछ मंझले।
उनके शरीर की बनावट भी अलग अलग थी,
कुछ मोटे, कुछ पतले,
और कुछ अलग ही बनावट वाले।
गूबर ने देखा कि हर जानवर की एक परछाईं थी।
और ये परछाइयां भी अलग अलग थीं,
कुछ बड़ी या छोटी, और कुछ मोटी या पतली।
यानि जैसा जानवर, वैसी उसकी परछाईं।

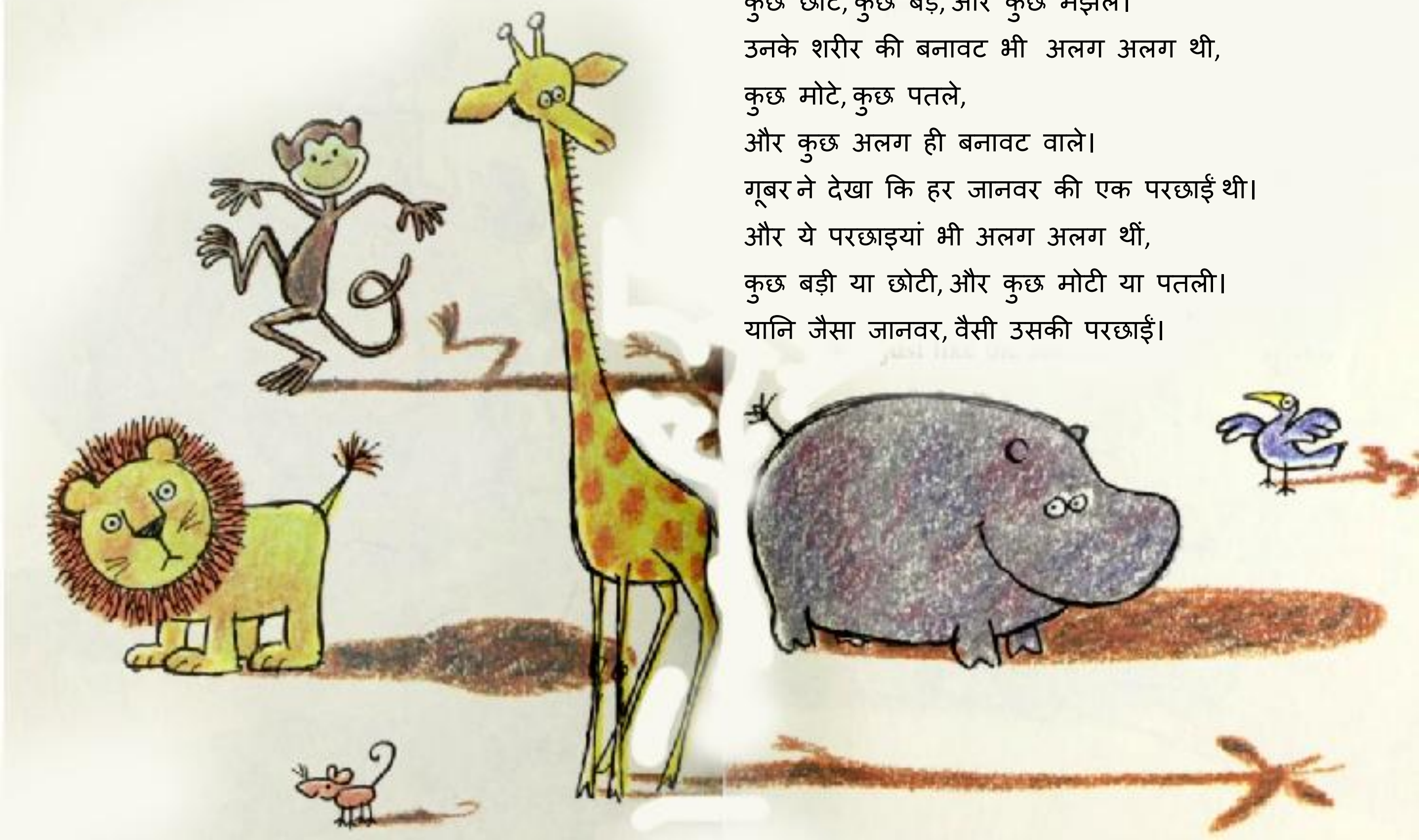

गूबर ने कुछ और भी देखा।
और वह यह, कि उसकी अपनी परछाईं
पूरे चिड़याघर में सबसे बड़ी थी।
और यह थी असल वजह
जो गूबर को उसकी नज़रों में
सबसे खास बनाती थी।

गूबर को अपने परछाईं से बड़ा लगाव था।
और लगता था,
उसकी परछाईं भी उसे बहुत चाहती थी।
वे हमेशा साथ रहते थे।
वे दोनों बहुत अच्छे दोस्त थे।

एक दिन गूबर बच्चों द्वारा उसकी तरफ
उछाली हुई मूंगफलियां पकड़ने में व्यस्त था।
उसकी परछाईं भी हमेशा की तरह उसके साथ थी।
जब गूबर मूंगफली पकड़ने के लिए अपनी सूंड लहराता,
तो उसकी परछाईं भी ऐसा ही करती थी।

गूबर इस व्यस्तता में कुछ बेपरवाह हो गया,
और देखना भूल गया कि वह कहाँ जा रहा है।
और वह खाई के इतना नज़दीक आ गया
कि उसमें गिरते गिरते बचा।
लेकिन उसकी परछाईं न बच पाई।

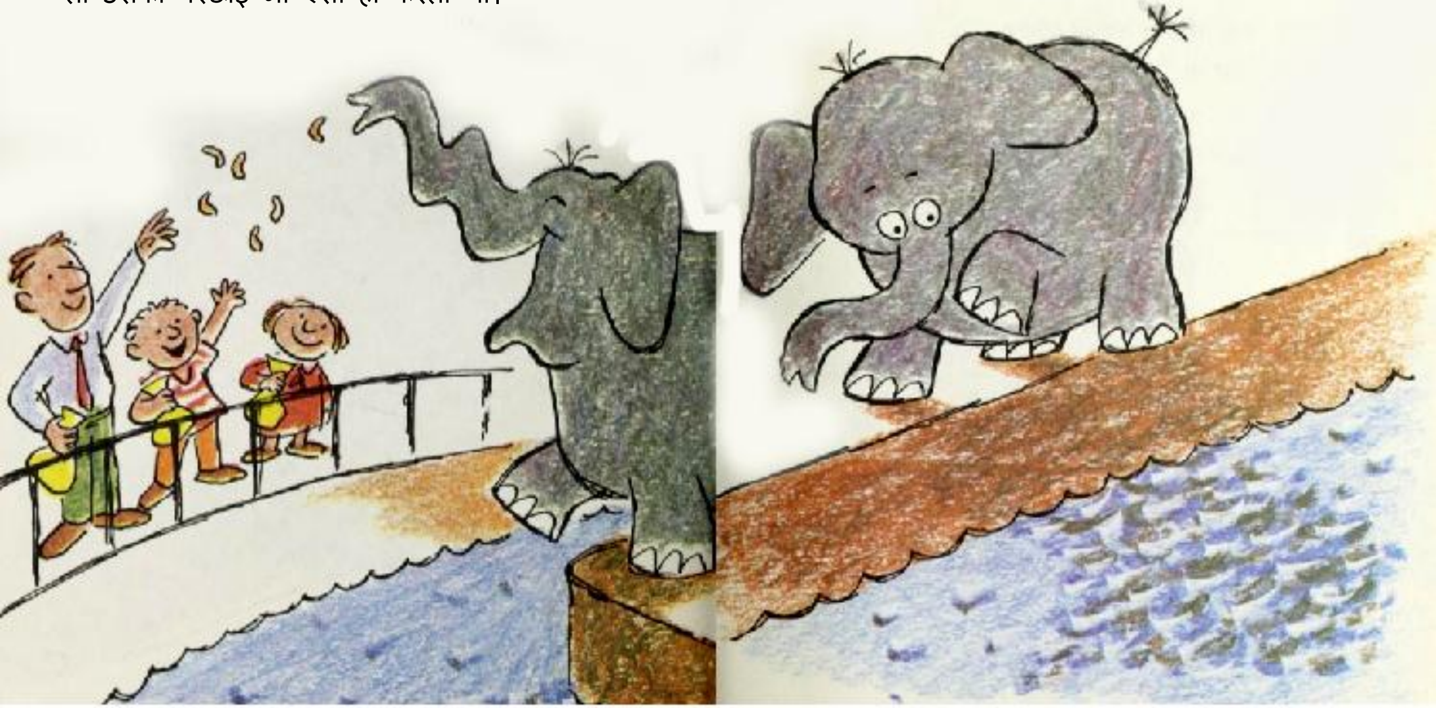

जब गूबर ने झुक कर खाई में देखा
तो उसे गहरे पानी के नीचे
अपनी परछाईं दिखाई दी।
वह बहुत परेशान हो गया।
उसे डर था कि शायद परछाईं
खाई में गिर कर घायल हो गई है।

गूबर एकदम शांत होकर खड़ा हो गया,
और कुछ मिनटों तक
अपनी परछाईं को देखता रहा।
वह अपनी जगह से नहीं हिली।

"अरे, यह तो मर गई!" गूबर ने सोचा।
लेकिन ज़रा सी इस खाई में गिरने से
यह मर कैसे सकती है।
मेरी परछाईं तो बहुत मज़बूत है।
मैंने तो कई बार इस पर पांव रखा है,
लेकिन इसे कुछ नहीं हुआ।
कुछ समझ नहीं आ रहा। "
और उसने अपना सर हिलाया।
परछाईं ने भी अपना सर हिलाया।

यह तो ठीक ठाक है!
अब गूबर को कुछ राहत महसूस हुई।
लेकिन उसकी परछाईं अभी भी
खाई की गहराई में ही थी।
और गूबर उसे बाहर नहीं निकाल पा रहा था।

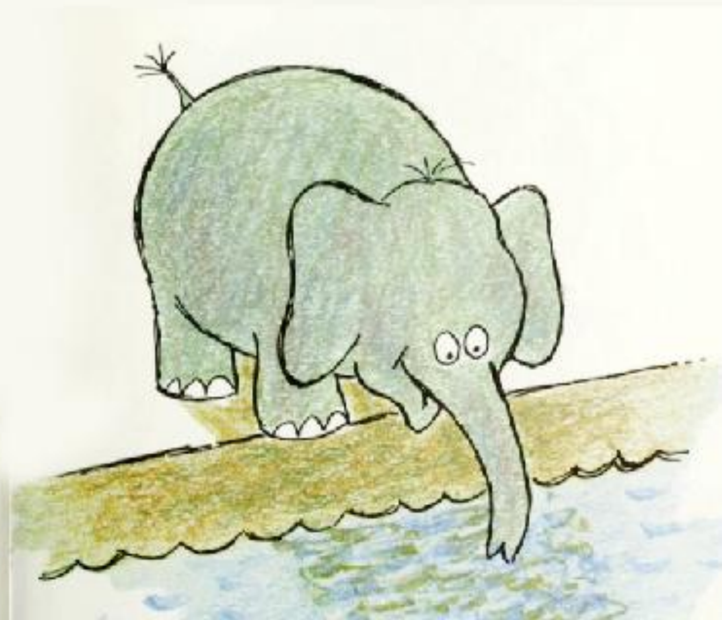

जल्दी ही दोपहर की हाथी-सवारी का समय हो गया।

कर्मचारियों ने उसका हौदा गूबर की पीठ पर बांध दिया।

"चलो गूबर, चलो," उन्होंने कहा।

लेकिन गूबर अपनी जगह से नहीं हिला।

वह और उसकी परछाईं हमेशा साथ जो रहते थे।

ऐसे समय वह अपनी परछाईं को

भला कैसे छोड़ सकता था,

जब वह मुसीबत में थी।

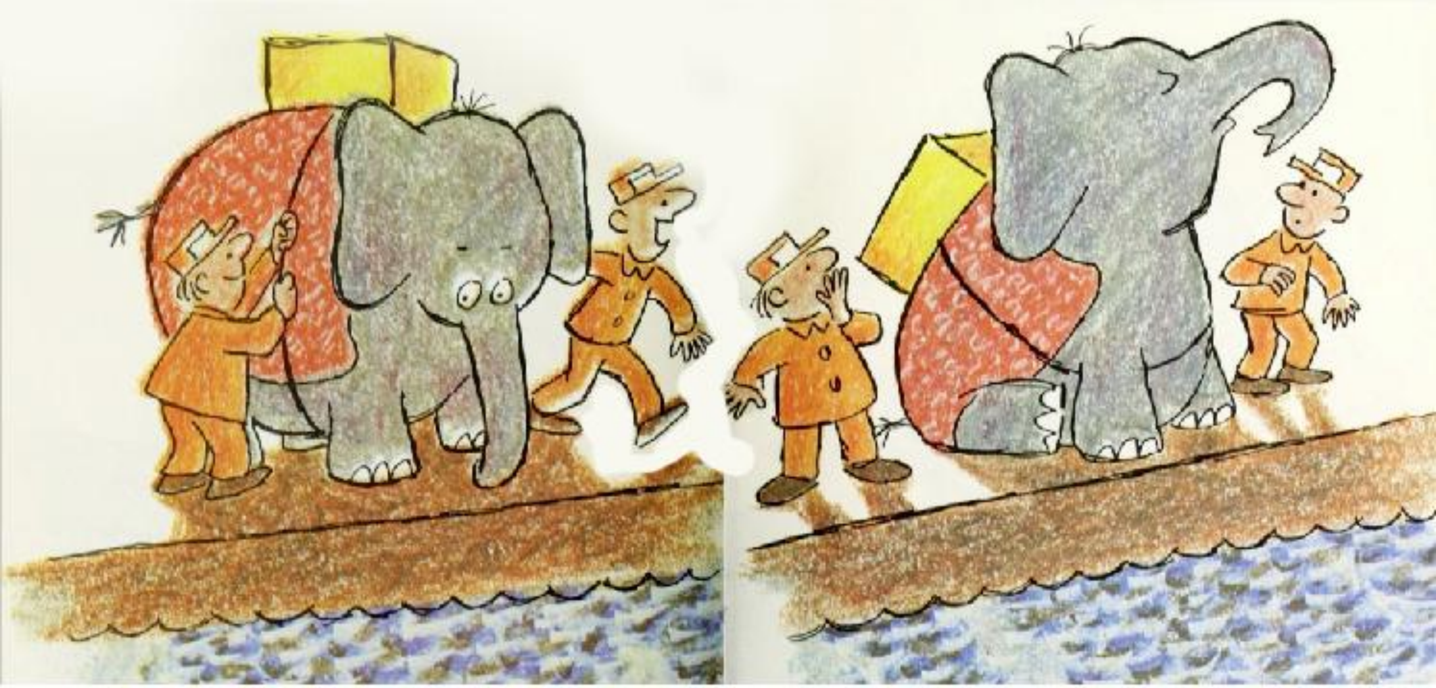

कर्मचारियों ने उसे धकेलने,
खेंचने की बहुत कोशिश की।
उसे डांटा, बहलाया।
लेकिन गूबर टस से मस न हुआ।

तो उन्होंने हौदा उतार दिया,
और बच्चों से कहा
कि आज हाथी की सवारी नहीं हो पाएगी,
क्योंकि गूबर की तबियत ठीक नहीं है।

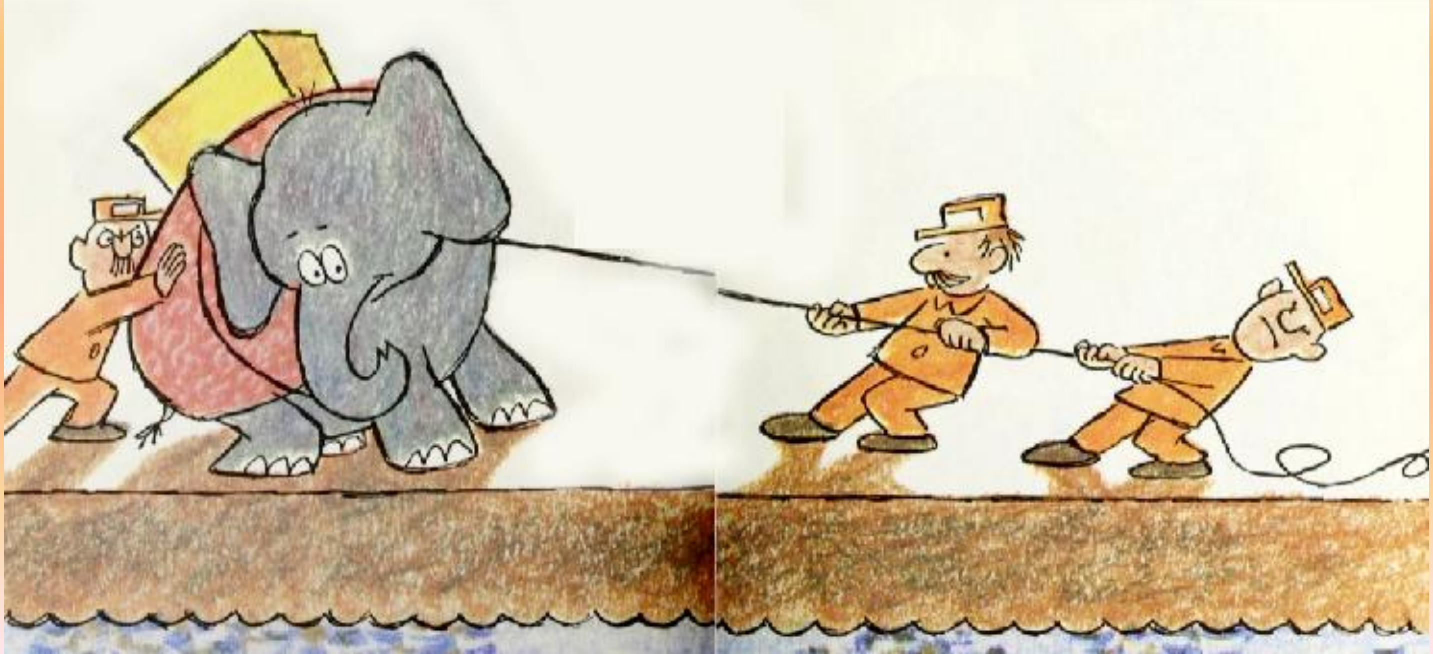

फिर जानवरों का डॉक्टर आया।
लेकिन उसे गूबर की सेहत में
कोई कमी नज़र नहीं आई।

"शायद इसने कुछ गलत चीज़ खा ली है,"
डॉक्टर ने कहा।
"मैं सुबह फिर इसका मुआयना करूँगा। "

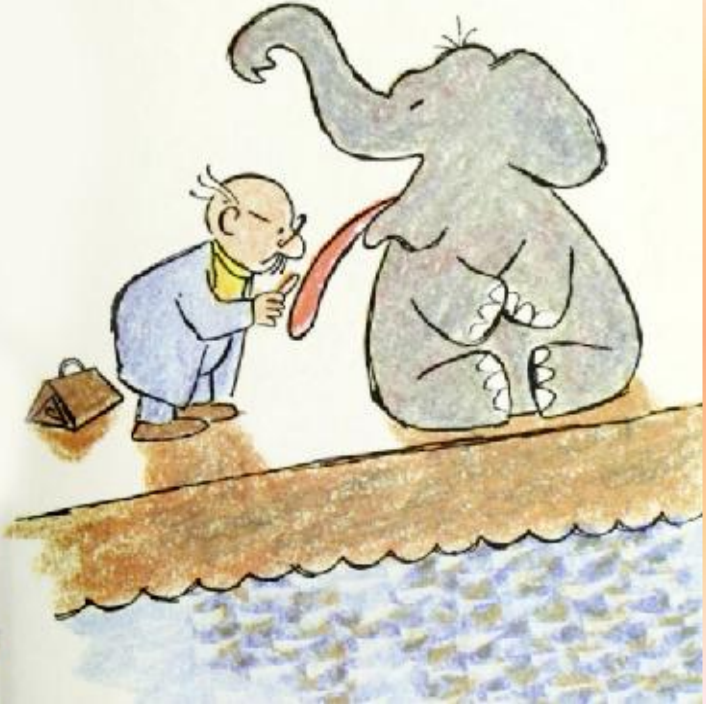

रात हो गई, और गूबर को अब
अपनी परछाईं दिखाई देनी बंद हो गई।
लेकिन वह वहीं रुका रहा,
अपनी परछाईं का साथ देने के लिए।
फिर पानी बरसने लगा।
बिजली भी चमक रही थी।
उसकी रौशनी में गूबर ने देखा,
कि परछाईं अभी भी मौजूद थी।
उसने कुछ और भी देखा।
खाई में पानी का स्तर अब बढ़ रहा था।
गूबर को पता नहीं था
कि उसकी परछाईं तैर सकती है या नहीं।
वह फ़िक्र से बेहाल हो रहा था,
और दुआ कर रहा था कि
काश जल्दी सुबह हो जाए।

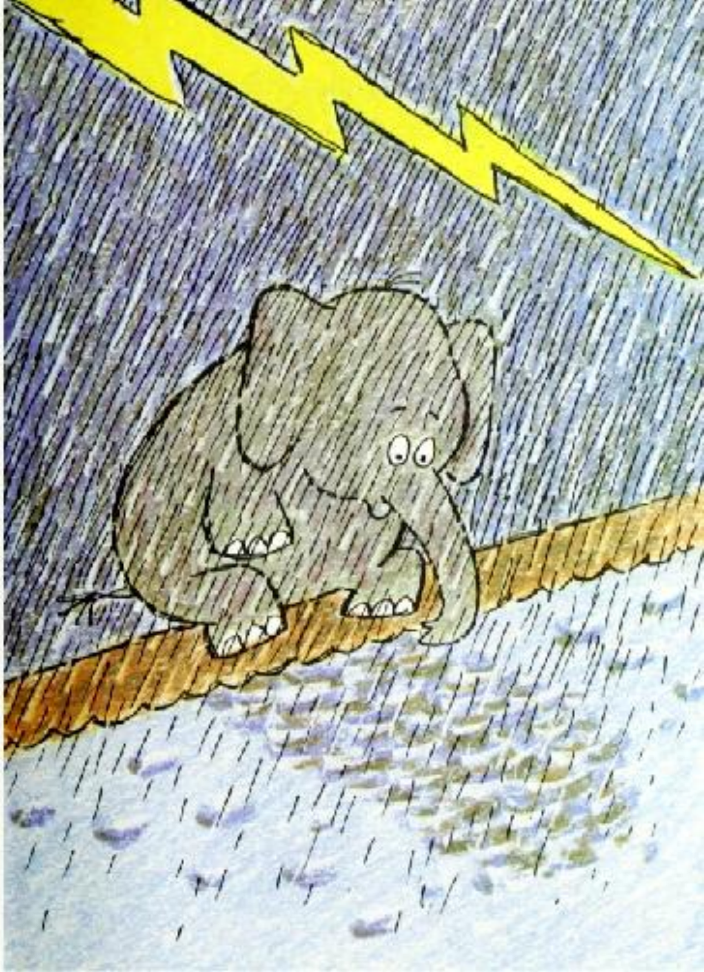

सुबह होने तक बरसात रुक चुकी थी,
लेकिन सूरज घने बादलों के पीछे छिपा था।
गूबर ने खाई में झांक कर देखा।
खाई में पानी ऊपर तक भर गया था।
और गूबर की परछाईं कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी।

"वह डूब चुकी है!", गूबर ने सोचा।
"अब मैं उसे कभी नहीं देख पाऊँगा!"

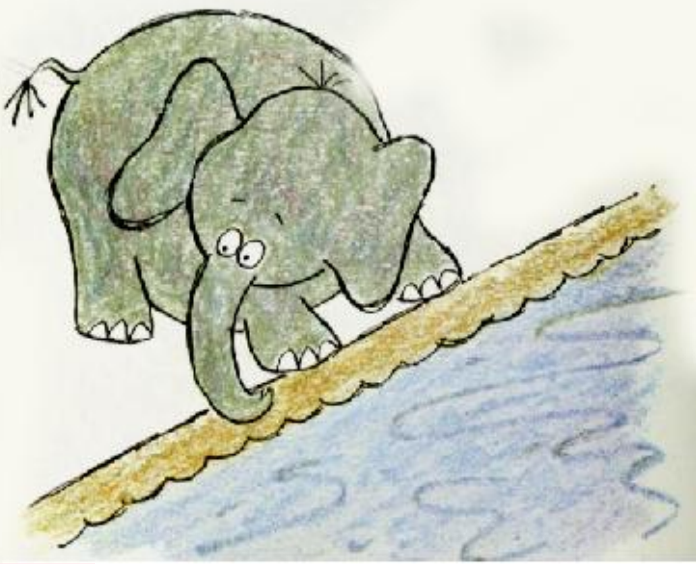

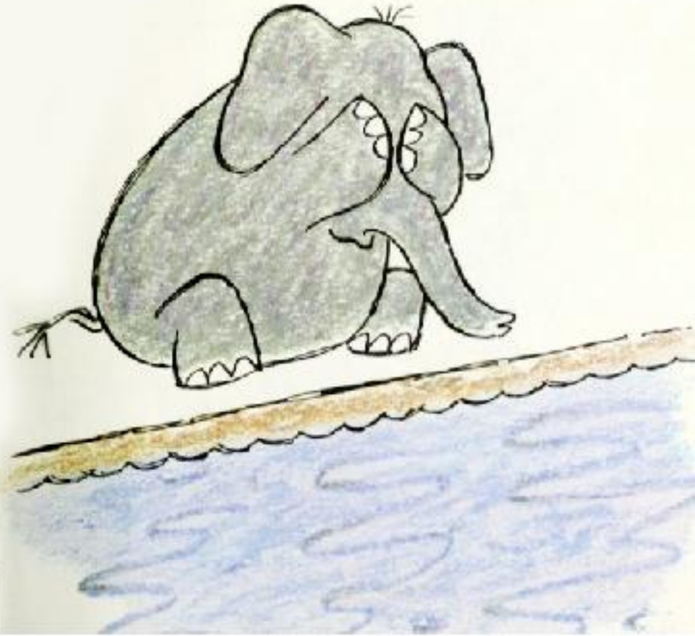

बहुत उदास होकर गूबर
अपने बाड़े की ओर चल दिया।
उसने पीछे घूम कर देखा,
इस उम्मीद में, कि शायद
वह दिखाई दे जाय।
लेकिन वह गायब थी।
उसका रोने का मन कर रहा था।

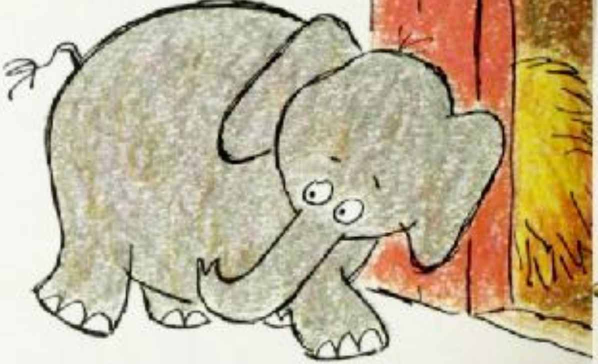

गूबर अपने अँधेरे बाड़े में बैठा था।
वह अकेला रहना चाहता था,
इसलिए वह एक कोने में
छिप कर बैठ गया।
"अब कुछ अच्छा महसूस
कर रहे हो?"
अचानक से आवाज़ आई।
डॉक्टर साहब आ गए थे।

डॉक्टर ने एक लालटेन जलाई,

ताकि वह गूबर को ठीक से देख सके।

और फिर गूबर ने जो देखा,

उसका दिल ख़ुशी से उछलने लगा।

वहीँ एक कोने में.....

वही कोना, जिसकी ओर गूबर देखा रहा था...

उसकी परछाईं उसके सामने थी,

ठीक पहले जैसी बड़ी।

पूरी रात पानी में रह कर

यह तनिक सिकुड़ी भी नहीं है।

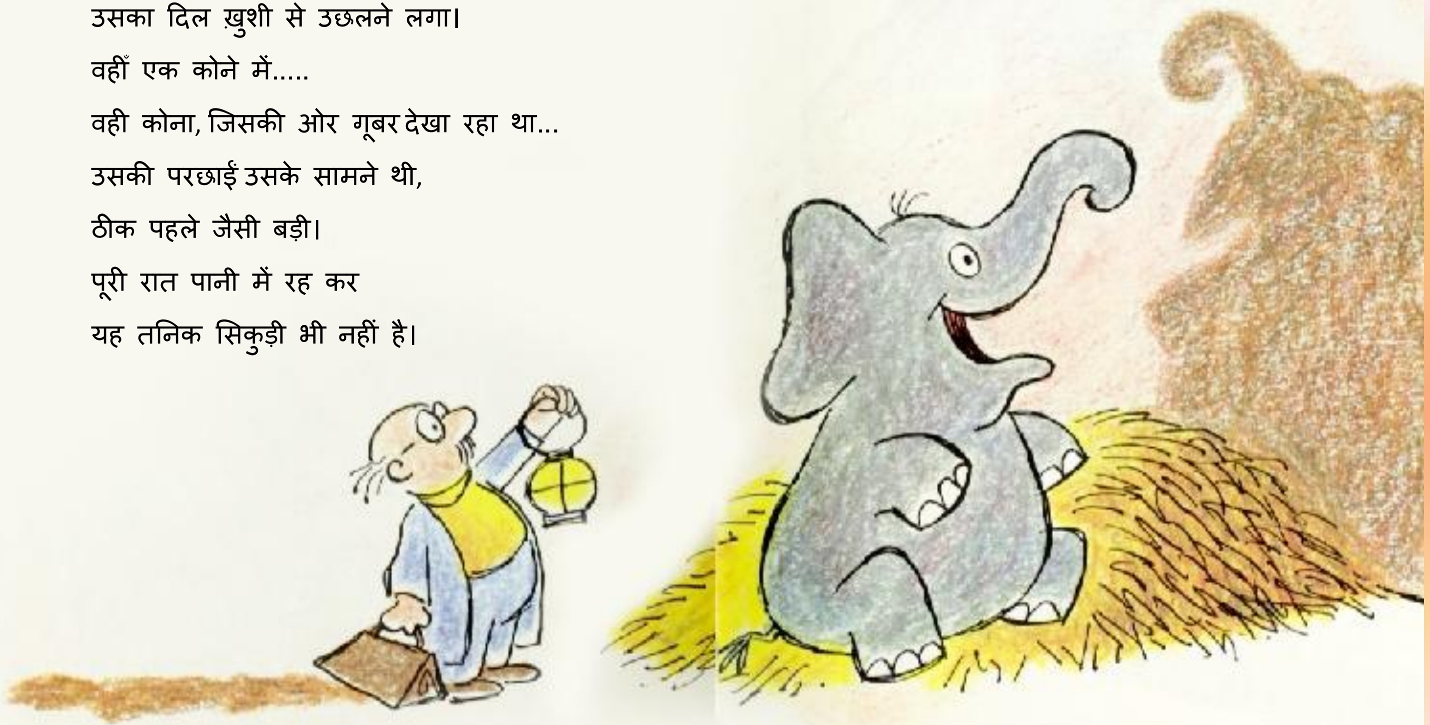

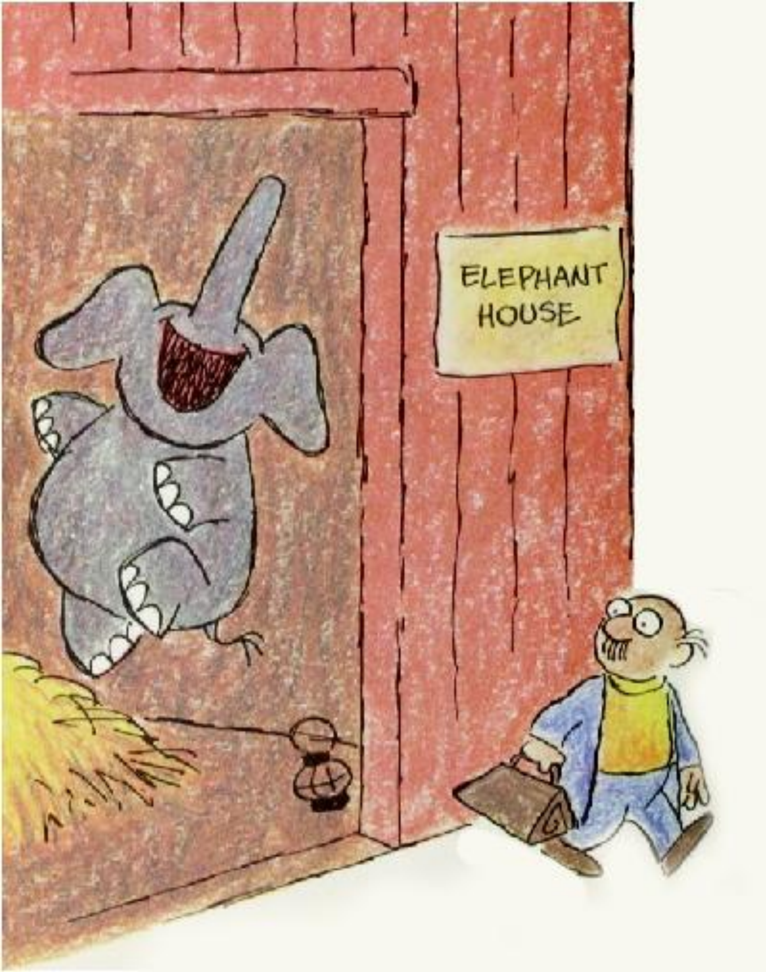

गूबर को कुछ नहीं पता कि उसकी परछाईं
बाड़े में कब आई, और कैसे आई।
लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था।
वे अब फिर एक दूसरे के साथ थे।
और यही सबसे खास बात थी।
"चलो, अच्छा है," डॉक्टर ने गूबर से कहा।
"मुझे नहीं पता तुम्हें क्या तकलीफ थी,
लेकिन अब सब कुछ ठीक है।"
उसने गूबर को थपथपाया, लालटेन बुझाई,
और दूसरे जानवरों का मुआयना करने चला गया।

लालटेन की रोशनी के बिना
गूबर को परछाईं दिखनी बंद हो गई।
लेकिन वह जानता था कि वह वहीं है,
बिलकुल सुरक्षित।
गूबर बहुत खुश था।

उसने जी भर कर
नाश्ता किया, और सुकून
भरी नींद सोया।
आखिर वह रात बड़ी
लम्बी रही थी।

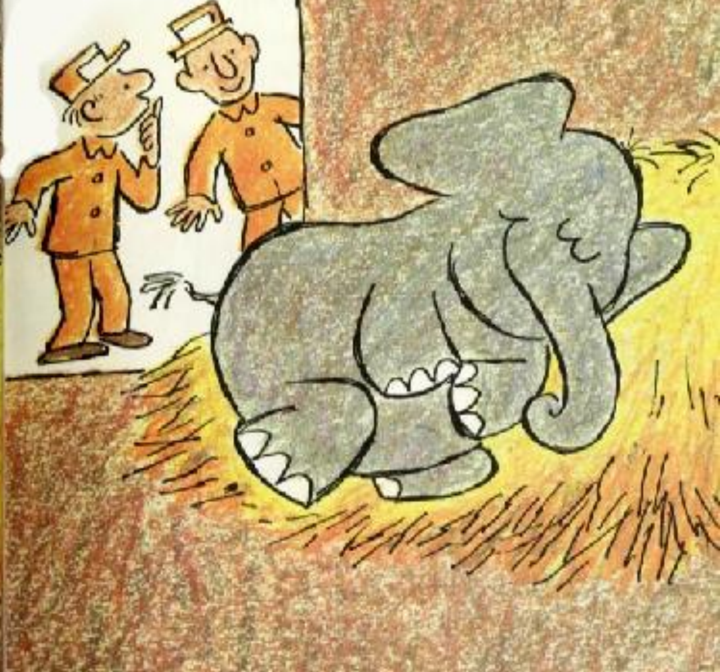

जब सुबह की हाथी-सवारी का समय हुआ,
कर्मचारी उसे बाहर लेकर आये।
और हौदा उसकी पीठ पर बांधा।
बादल छंट चुके थे,
और सूरज शान से चमक रहा था।
गूबर ने अपनी परछाईं की ओर देखा,
और ख़ुशी से मुस्कुराया।

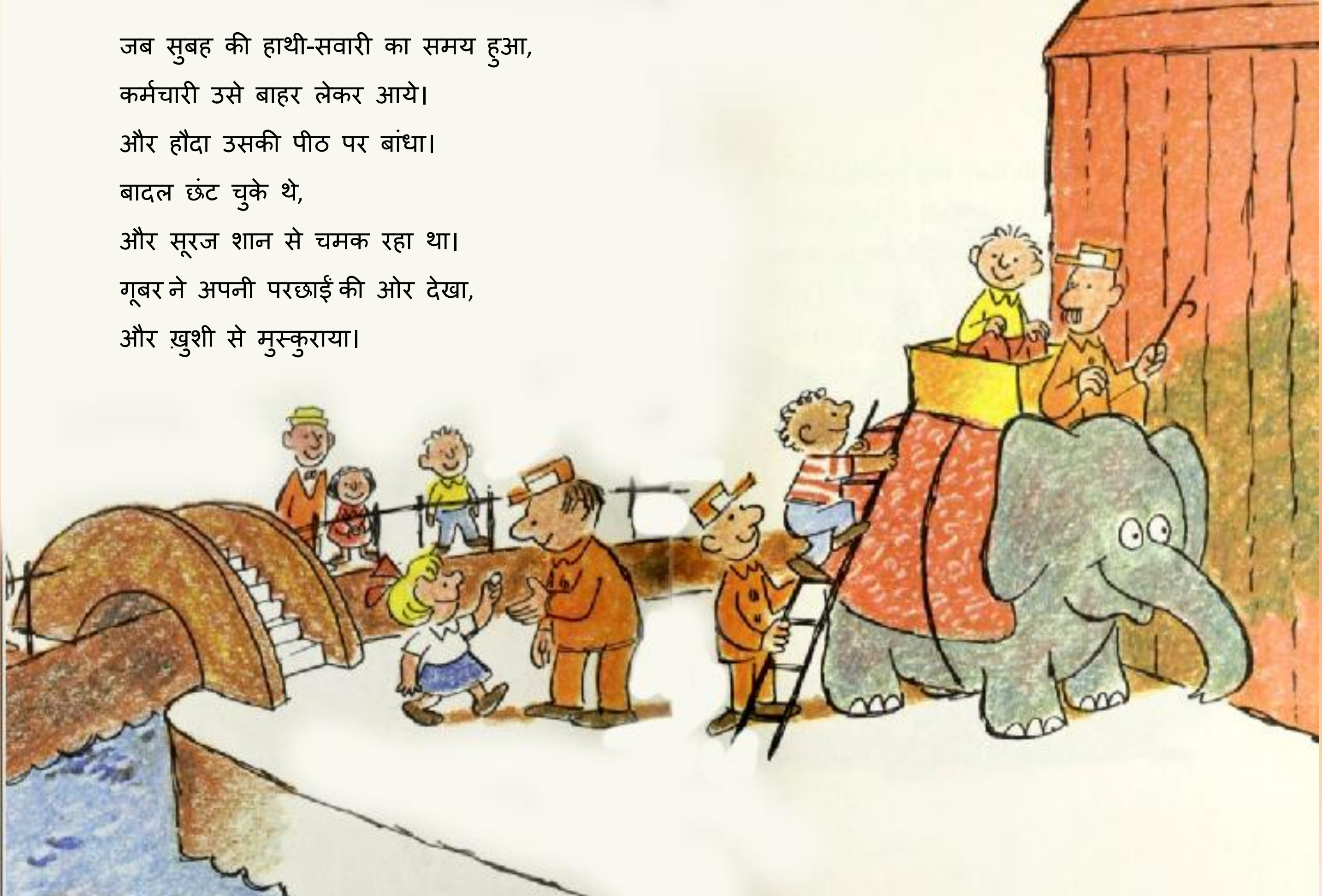

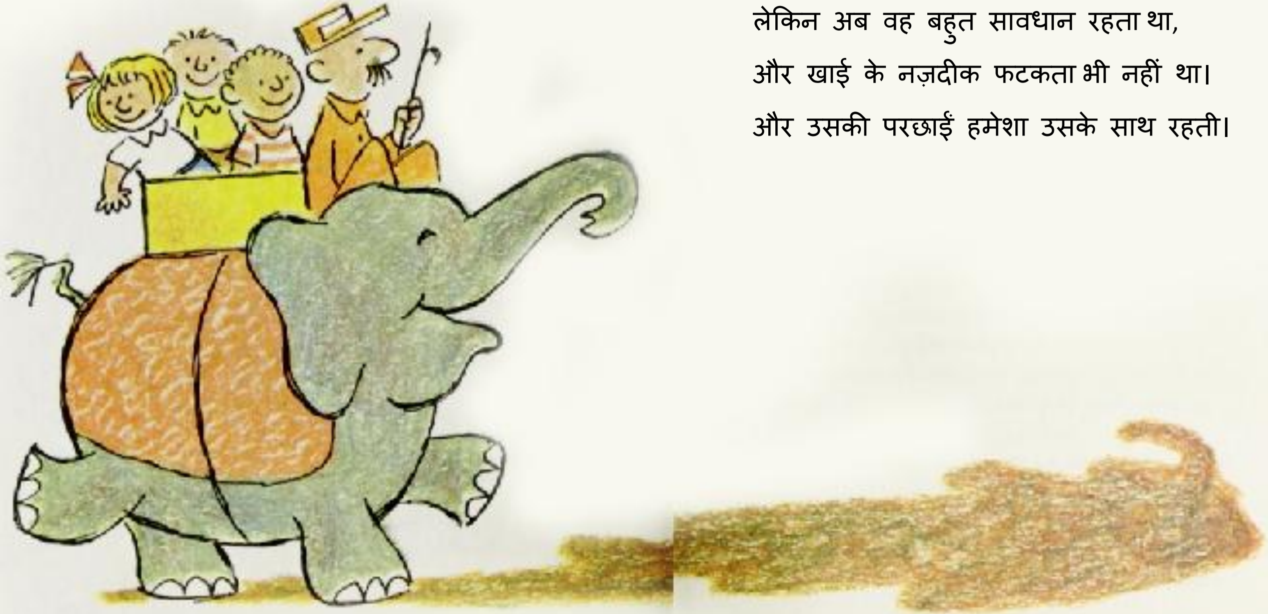

बच्चों को आज एकदम पैसा-वसूल सवारी मिली।
गूबर ने उन्हें खूब देर तक सैर कराई,
क्योंकि आज वह बहुत खुश था।
लेकिन अब वह बहुत सावधान रहता था,
और खाई के नज़दीक फटकता भी नहीं था।
और उसकी परछाईं हमेशा उसके साथ रहती।